डा० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

बोली, विभाषा और भाषा :→

संसार की विभिन्न भाषाओं को अनेक कोटियों में० बाँटा गया है। इसका आधार आकृतिमूलक आदि वर्गीकरणों के अतिरिक्त बोली, विभाषा और भाषा के आधार पर भी किया जाता है।

1) बोली (Sub-dialect) :→ यह भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसका सम्बन्ध ग्राम या मण्डल से होता है।

⇒ इसमें व्यक्तिगत बोली, घरेलु शब्द और देशज शब्दों का पर्याप्त प्रभाव रहता है।

⇒ यह मुख्य रूप से बोलचाल की भाषा होती है। साहित्यिक रचनाओं का अभाव रहता है।

⇒ फ्रांसीसी शब्द पात्वा की विशेषताएँ इसमें आ पूर्णरूप से प्राप्त नहीं होती हैं तथापि बोली के लिए इसे समझा जा सकता है।

⇒ भाषाशास्त्रियों ने पात्वा की चार विशेषताएँ मानी हैं —

i) यह डाएलेक्ट का छोटा एवं स्थानीय रूप है।
ii) यह साहित्यिक भाषा नहीं होती है।
iii) यह व्याकरण की दृष्टि से असाधु भाषा होती है।
iv) इसके प्रयोक्ता अशिक्षित या निम्न स्तर के व्यक्ति होते हैं।

⇒ पात्वा की ये सभी विशेषताएँ बोली में भी प्राप्त होती है।

⇒ ब्रज अवधि और भोजपुरी के स्थानीय आधार पर अनेक रूप देखे जाते हैं। भोजपुरी के गाजीपुर, बलिया, शाहाबाद आदि जिलों में थोड़े परिवर्तन से जिला-स्तर पर विभिन्न रूप मिलते हैं।

ii) विभाषा (Dialect) :→ विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा विस्तृत होता है। यह एक प्रान्त या उपप्रान्त में प्रचलित होती है।

⇒ इसमें साहित्यिक रचनाएँ भी प्राप्त होती है। जैसे- हिन्दी की विभाषाएँ प्रचलित हैं— खड़ी बोली, ब्रज भाषा, अवधी, भोजपुरी आदि।

⇒ बोलियाँ राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि आधार पर अपना क्षेत्र बढ़ा सकती हैं और साहित्य-रचना आदि के आधार पर वे अपना स्थान बोली से उच्च करते हुए विभाषा पर प्रचलित होती है।

⇒ पश्चात् में ये भाषा का स्तर भी प्राप्त कर लेती है। जैसे - खड़ी बोली मेरठ, बिजनौर आदि की विभाषा होते हुए राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत होने के कारण ~~विभाषा~~ राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुई है।

बोली और विभाषा निम्नलिखित कारणों से महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करती हैं:—

i) जब कोई बोली या विभाषा अपनी सहयोगिनी बोलियों से पृथक् होती है या अकेली शेष रह जाती है तो उसका स्थान महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

ii) साहित्यिक श्रेष्ठता के आधार पर या साहित्यरचना के आधार पर भाषा का स्थान उच्च हो जाता है। सूर काव्य के कारण ब्रज भाषा का और तुलसी के काव्य ग्रन्थों से अवधी का महत्त्व बढ़ा। साहित्यिक अभिवृद्धि के कारण ही खड़ी बोली राष्ट्र भाषा पद पर अधिष्ठित हुई।

iii) सांस्कृतिक या धार्मिक श्रेष्ठता के आधार पर मथुरा, राम-भक्ति के आधार पर अयोध्या का महत्त्व बढ़ा। इस प्रकार ब्रज और अवधी को धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार पर बल मिला।

iv) अँग्रेज और अमरीकी अपनी व्यापारिक उन्नति आदि

के द्वारा विश्व में फैले हुए हैं, अतः अंग्रेजी भाषा को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

v) राजाश्रया प्राप्त होने से कोई भी विभाषा भाषा बन जाती है। राजाश्रय के आधार पर अंग्रेजी राजभाषा के पद पर अधिष्ठित हुई। इसी प्रकार मुगलकाल में उर्दू और फारसी को राजभाषा घोषित किया गया था।

iii) भाषा, परिनिष्ठित या आदर्श भाषा (Standard language):
इसको राष्ट्रभाषा या टकसाली भाषा कहते हैं।
⇒ विभिन्न भाषाओं में से कोई एक विभाषा अपने गुण-गौरव, साहित्यिक अभिवृद्धि, जन सामान्य में अधिक प्रचलन या राजाश्रय आदि के आधार पर राजकार्य के लिए चुन ली जाती है। और उसको राष्ट्रभाषा या राजभाषा के रूप में घोषित किया जाता है।

बोली और भाषा में अन्तर :—

बोली	भाषा
i) बोली स्थानीय भाषा है।	i) राजभाषा या राष्ट्रभाषा के लिए भाषा शब्द का प्रयोग होता है।
ii) बोली का क्षेत्र छोटा होता है।	ii) भाषा का क्षेत्र बड़ा होता है।
iii) बोली में साहित्यिक रचनाएँ अल्पल्प या अनुपलब्ध होती हैं।	iii) इसमें साहित्यिक रचनाएँ प्रचुर रूप से प्राप्त होती हैं।
iv) बोली लोक-साहित्य, लोक-गीत एवं बोल-चाल तक सीमित होती है।	iv) भाषा शिक्षा या उच्च-शिक्षा का माध्यम होती है।
v) अनेक बोलियों की एक भाषा होती है।	v) एक भाषा की अनेक बोलियाँ हो सकती हैं।